सांवरो सलोनो (७५)

सांवरो सलोनो पिया चित जो आ चोर नेणनि जा बाण मारे नंद किशोर ।।

रोम रोम जादू भरियो मनखे लुभाये थो लोक वेद मरियादा पल में मिटाए थो प्राणनि में पेही वयो श्यामु शिर मोर ।।

खिली खिली दिलि खसे बांबरी बणाए थो बन में बुलाए प्यारो रास में नचाए थो नीलड़ो बादलु प्यारो स्वामिनि आ गौर ।।

मुरलीअ जी धुनि आई नूपरिन झंकार आ स्वामिनि जे हथड़िन सुन्दर सितार आ कल ना पवे थी कंहिखे राति आ यां भोर ॥

बृज जो सौभा.गु कृष्णु नींह जो निधानु आ यशोदा जो लालु मुंहिजो भोरो भगवान आ देव मुनी भीड़ रहे नन्द राइ पौरि ।। अमड़ि यशोदी धनु धनु नंदराई आ धनु ग्वाल गोपी गोप धनु बृज गांइ आ जय जय श्रीराधेश्याम जिति किथि शोर ।।

धनु धनु मैगसि मैया जिसड़ो .बुधायो आ प्रीतम जे पलइ लाये भालड़ो भलायो आ नाम जो नग़ारो व.जे सदा घन घोर ।।